डॉ. गुहा के विचार (Views of B. S. Guha)

1931 की जनगणना के लिए डॉ. हट्टन को अध्यक्ष नियुक्त किया गया तब उन्होंने भारत के प्रजातीय सर्वेक्षण के लिए डॉ. बी. एस. गुहा को विशेष रूप से इस कार्य के लिए नियुक्त किया। डॉ. गुहा ने भारत के विभिन्न भागों के 2500 से भी अधिक व्यक्तियों की मानवमितीय आधार पर परीक्षा करके तीन वर्षों बाद अनेक महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत किये। भारत में प्रजातियों की उत्पत्ति तथा उनके वर्गीकरण के क्षेत्र में किया जाने वाला यह सम्भवतः सबसे सफल और प्रामाणिक अध्ययन था। यही कारण है कि डॉ. गुहा के निष्कर्षों को हट्टन ने पूर्णतया स्वीकार किया है जबकि एक-दो तथ्यों से असहमत होते हुए भी हट्टन (Hutton) और मजूमदार ने इसे भारत के प्रजातीय इतिहास में 'एक महत्वपूर्ण खोज' के रूप में स्वीकार किया है। डॉ. गुहा के अनुसार भारत में पायी जाने वाली विभिन्न प्रजातियों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है :[1]

(1) **नीग्रिटो** (Negrito)—डॉ. गुहा नीग्रिटो को भारत का प्राचीनतम प्रजातीय तत्व मानते हैं। नीग्रिटो प्रजाति नीग्रॉयड स्कन्ध (stock) की ही एक शाखा है। इसकी शारीरिक विशेषताओं में काला रंग, छोटा कद, चौड़ा सिर, ऊन की तरह बाल, कुछ चौड़ी और छोटी नाक तथा मोटे होंठ प्रमुख हैं। इस प्रजाति के तत्व मालाबार की कादर तथा पुलाया जनजाति, असम की नागा जनजाति और बिहार के पूर्वी भागों में रहने वाली जनजातियों में पाये जाते हैं। कुछ विद्वानों ने डॉ. गुहा के समर्थन में अण्डमान और निकोबार द्वीप-समूह में भी नीग्रिटो प्रजाति के तत्वों के होने का दावा किया है।

(2) **प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड** (Proto-Australoid)—डॉ. गुहा के अनुसार भारत में बाहर से आकर बसने वाली सबसे पहली प्रजाति प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड है। कुछ विद्वान ऐसा मानते हैं कि यह आस्ट्रेलिया से भारत में आई, जबकि अन्य विद्वानों का विचार है कि इसकी उत्पत्ति

---

[1] B. S. Guha, *Racial Elements in Indian Population*, article published from Oxford University Press, Bombay (1944).

पैलेन्सटाइन से आने वाले व्यक्तियों का नीग्रिटो प्रजाति से मिश्रण होने से हुई। इस प्रजाति के व्यक्तियों का रंग चाकलेटी, नाक चौड़ी, होंठ मोटे, कद छोटा, सिर लम्बा तथा बाल काले और घुँघराले होते हैं। डॉ. गुहा के अनुसार मध्य तथा दक्षिण भारत के अधिकांश लोग इसी प्रजाति के प्रतिनिधि हैं। इन क्षेत्रों में निम्न वर्ण की जातियों में इस प्रजाति का रक्त अधिक मात्रा में पाया जाता है। हमारे समाज में इन्हें 'निषाद' भी कहा जाता रहा है।

(3) **मंगोलॉयड** (Mongoloid)—गुहा ने भारत में पायी जाने वाली मंगोलॉयड प्रजाति के दो प्रमुख प्रारूपों (types) का उल्लेख किया है—(क) प्राचीन मंगोलॉयड (Palaeo Mongoloid) तथा (ख) तिब्बती मंगोलॉयड (Tibeto Mongoloid)। **प्राचीन मंगोलॉयड** प्रमुख रूप से दो भागों में बँटे हुए हैं—लम्बे सिर वाले और चौड़े सिर वाले। लम्बे सिर वाले मंगोलॉयड उत्तर प्रदेश और असम के सीमान्त प्रदेशों, तथा चौड़े सिर वाले नेपाल, बर्मा और वर्तमान नागालैण्ड में फैले हुए हैं। इनकी सभी शारीरिक विशेषताएँ मंगोल प्रजाति के ही समान हैं, अन्तर केवल बनावट का है। **तिब्बती मंगोलॉयड** में 'B' रक्त की प्रधानता है। यह विशेष रूप से तिब्बत, भूटान, इरावती नदी की घाटी और असम के अनेक भागों में पाये जाते हैं। पौराणिक रूप से इस प्रारूप का उल्लेख हमें 'किरात' शब्द में मिलता है।

(4) **भूमध्यसागरीय** (Mediterranean)—अन्य विद्वानों के समान डॉ. गुहा ने भी भूमध्यसागरीय प्रजाति को भारत के प्रजातीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। आपके अनुसार भारत में लम्बे सिर वाली प्रजाति के कई रूप उपलब्ध होने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह प्रजाति अनेक भागों में विभक्त होकर भूमध्यमागर की ओर से भारत में आई है। इस प्रकार इसकी तीन प्रमुख शाखाओं का उल्लेख किया जा सकता है—(क) प्राचीन भूमध्यसागरीय (Palaeo Mediterranean), (ख) भूमध्यसागरीय (Mediterranean), तथा (ग) पूर्वी प्रकार (Oriental Type)। बक्सटन (Buxton) का भी यही विचार है कि भारत की जनसंख्या में लम्बे सिर का आधिक्य होने के साथ ही उनमें जो भिन्नता पायी जाती है, उससे भूमध्यसागरीय प्रजाति का अनेक भागों में बँटकर यहाँ प्रवेश करना सिद्ध होता है। इन तीनों शाखाओं में प्राचीन भूमध्यसागरीय प्रजाति का सम्बन्ध द्रविड़ भाषा (विशेषकर कन्नड़, मलयालम, तमिल) वाले प्रदेशों से लगाया जाता है जो सम्भवतः भारत में सबसे पहले आई। इसके बाद दूसरी शाखा ने यहाँ प्रवेश किया जो भारत के निचले प्रदेशों में न जा सकने के कारण पंजाब और गंगा की घाटी के ऊपर हिस्से में ही बस गयी। भूमध्यसागरीय प्रजाति की तीसरी शाखा को हम 'पूर्वी प्रकार' सम्भवतः इसलिए कहते हैं कि यह दूसरी शाखा और यहाँ के मूल निवासियों के मिश्रण का परिणाम है। इनका विस्तार पंजाब, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक पाया जाता है। यह शाखा कॉकेशायड स्कन्ध के कुछ निकट है।

(5) **चौड़े सिर वाली प्रजाति** (Brachy Cephalic Race)—डॉ. गुहा ने भारत में चौड़े सिर वाली प्रजाति को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इसको 'पश्चिमी चौड़े सिर वाली प्रजाति' भी कहा जाता है क्योंकि इसका मूल स्थान पश्चिमी और मध्य यूरोप माना गया है। डॉ. गुहा ने भारत में इस प्रजाति की तीन प्रमुख शाखाओं का उल्लेख किया है—(क) अल्पाइन (Alpine), (ख) दिनारिक (Dinaric), तथा (ग) आर्मीनॉयड (Arminoid)। प्रथम शाखा को **अल्पाइन** इसलिए कहा गया क्योंकि इसकी शारीरिक विशेषताएँ मध्य यूरोप के आल्पस पर्वत के आस-पास रहने वाले व्यक्तियों में सबसे अधिक देखने को मिलती हैं। इस शाखा की शारीरिक विशेषताओं में त्वचा का पीलापन लिये हुए भूरा रंग, मध्यम कद (औसतन 165 सेण्टीमीटर), कन्धे चौड़े

और नाक छोटी व ऊँची, प्रमुख लक्षण हैं। भारत में इस शाखा के सबसे अधिक लक्षण गुजरात में और कुछ सीमा तक मध्य प्रदेश, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में पाये जाते हैं। दूसरी शाखा का सम्बन्ध आल्पस पर्वतमाला के ही एक अन्य भाग 'दिनारिक' से है। ढलवाँ माथा, सिर का पिछला भाग चपटा, उठी हुई ठोड़ी, पतले होंठ, औसत कद (लगभग 170 सेण्टीमीटर), मोटी गर्दन, त्वचा का हल्के जैतूनी से लेकर काला तक रंग, इस शाखा की प्रमुख शारीरिक विशेषताएं हैं। इसके सर्वोत्तम प्रतिनिधि कुर्ग में पाये जाते हैं जबकि बंगाल, उड़ीसा और दक्षिण भारत में भी इस शाखा से सम्बन्धित कुछ विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। तीसरी शाखा अर्थात् **आर्मीनॉयड** को यद्यपि एक उच्च सभ्यता वाली शाखा के रूप में प्रस्तुत किया गया है लेकिन भारत में इसका अधिक विस्तार नहीं मिलता। डॉ. गुहा ने बम्बई के पारसियों को ही इस शाखा का प्रतिनिधि स्वीकार किया है। रिजले ने चौड़े सिर वाली प्रजाति को ही मंगोलो-द्रवीडियन के नाम से सम्बोधित किया है।

(6) **नॉर्डिक** (Nordic)—डॉ. गुहा का विश्वास है कि इस प्रजाति ने भारत में ईसा से लगभग 1500 वर्ष पहले प्रवेश किया। आरम्भ में यह पंजाब में बसे, और इसके बाद गंगा-यमुना की घाटी की ओर बढ़ते हुए भारत के अन्य भागों में फैल गये। इनका लम्बा सिर, ऊँची और पतली नाक, पतले होंठ, कद औसत से कुछ अधिक, सफेद से लेकर गेहुँआ तक रंग, सीधे बाल आदि कुछ प्रमुख शारीरिक विशेषताएँ हैं। इस प्रजाति के अधिकतर व्यक्ति सिन्धु नदी की ऊपरी घाटी (जो अब पाकिस्तान में है), हिन्दूकुश पर्वत के दक्षिणी भागों, कश्मीर, पंजाब और राजस्थान में फैले हुए हैं।

डॉ. गुहा की उपर्युक्त खोज भारत के प्रजातीय इतिहास में महत्वपूर्ण है। इस वर्गीकरण के द्वारा गुहा ने दो तथ्यों पर विशेष जोर दिया है। प्रथम तो यह कि 'नीग्रिटो' भारत का सबसे प्राचीन प्रजातीय तत्व है और दूसरा यह कि भारत में चौड़े सिर वाली प्रजाति के अस्तित्व को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। इस आधार पर ही **डॉ. कीथ** का कहना है कि "डॉ. गुहा के सर्वेक्षण का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह खोज निकालना है कि भारत में चौड़े सिर वाले व्यक्तियों का आधिक्य है, जो अभी तक शंका का विषय बना हुआ था।" इसके उपरान्त भी डॉ. गुहा के निष्कर्षों को दोषरहित नहीं कहा जा सकता। उनके वर्गीकरण का सबसे बड़ा दोष यह है कि उन्होंने 'नीग्रिटो' तत्व को सबसे अधिक मौलिक कहा है जिसे प्रमाणित करना अत्यन्त कठिन है। दूसरा दोष यह है कि डॉ. गुहा द्वारा पश्चिमी विचारकों और विशेष रूप से हट्टन के द्वारा प्रस्तुत प्रजातियों की नामावली को प्रयोग में लाने से प्रजातीय विवेचन में कुछ अस्पष्टता-सी आ गयी है।